



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

ऋग्वेद की वर्तमान समय में उपादेयता एवं महत्व

*¹ रवि कुमार मीना

*¹ सहायक प्रोफेसर, संस्कृत साहित्य, राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख, चूरू, राजस्थान, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 5.231

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 28/Dec/2023

Accepted: 27/Jan/2024

सारांश:

ऋग्वेद वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण उपादेयता एवं महत्व रखता है। ऋग्वेद में देवी देवताओं ऋषि आदि संवादों से विभिन्न प्रकार के उपदेश ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसकी ऋचाओं और संहिता संग्रह में वर्तमान विश्व का आवश्यक महत्व स्पष्ट दिखाई देता है। ऋग्वेद वेदों में सबसे पुराना है, जो हिंदू धर्म में सबसे पवित्र ग्रंथ है। विद्वानों का मानना है कि ऋग्वेद लगभग ईसा पूर्व सैकड़ों वर्षों में लिखा गया था। 2000 ईसा पूर्व, जिन लोगों ने वेदों को प्रतिपादित किया। परंपरागत रूप से यह माना जाता है कि ऋषियों ने वेदों की रचना नहीं की, बल्कि ये ग्रंथ उनके सामने प्रकट हुए और उन्होंने इन ग्रंथों को लिपिबद्ध किया। उन्होंने सोस (सोम) के उपयोग के माध्यम से इस ज्ञान तक पहुंच प्राप्त की, जो देवताओं द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक दिव्य, नशीला पेय था। जब कोई ऋग्वेद का संदर्भ देता है तो विद्वानों का अनुमान है कि ये अंतिम पुस्तकें 700 ईसा पूर्व के आसपास लिखी गई थीं। ऋग्वेद में हमारे जीवन में गुरु शिष्य परंपरा संस्कृति व्यवहार और ज्ञान के विभिन्न विषयों का समावेश प्रदान करता है।

*Corresponding Author

रवि कुमार मीना

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत साहित्य, राजकीय
महाविद्यालय, सिद्धमुख, चूरू, राजस्थान,
भारत।

मुख्य शब्द: उपादेयता, कलात्मक, मण्डल, प्रासंगिकता, वस्तुवाद, भौतिक जीवन, एकांकी, उन्मुक्त, अवयवों, सात्विक, ऊर्जावान, सारबद्ध, ऋचाओं, नितांत, सनातन आदि।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में जीवन जीना एक कलात्मक है, वर्तमान के दौर में मनुष्य नये-नये आविष्कार व संचार माध्यम से सुसज्जित है लेकिन मनुष्य जीवन की प्रासंगिकता से दूर होता चला जा रहा है। वस्तुवाद के भौतिक जीवन में अपनी वास्तविकता से दूर तथा अनावश्यक परिपेक्ष्य की तरफ एकांकी होता जा रहा है। सभी वर्ग समुदाय अपनी मूल संस्थापना से इतर होकर एक नवीन जीवन जी रहा है। हमारे वेद सर्व प्राचीन वेद ऋग्वेद जीवन की मूलतः तथा अवसरवाद के उन्मुक्तता को दूर करने के क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाने का काम कर रहा है। वर्तमान समय में ऋग्वेद जो हमारा मूल तथा प्रारंभिक वेद है, जो जीवन और नवीन अवयवों की चेतना के रूप में प्रखर है। वर्तमान समय में जीवन को सात्विक ऊर्जावान नवीन समावेश के लिए ऋग्वेद की महती आवश्यकता है। ऋग्वेद सारबद्ध ज्ञान परक श्लोकों व ऋचाओं का महत्वपूर्ण वेद है। वर्तमान समय में ऋग्वेद की उपादेयता व महत्व जीवन के लक्षण के लिए नितांत आवश्यक है। ऋग्वेद वर्तमान समय में नैतिक जीवन शैली का

प्रमुख केंद्र बिंदु कहा जा सकता है। ऋग्वेद वर्तमान समय में सनातन धर्म की ध्वजा को धारण किए हुए हैं क्योंकि ऋग्वेद में कहा गया है- "एकम् सदविप्रा बहुधा वदन्ति।" ऋग्वेद- 1/164 अर्थात् सत्य एक ही है, उसके प्रकार अलग हो सकते हैं।

ऋग्वेद की वर्तमान समय में उपादेयता

ऋग्वेद भारतीय सनातन धर्म का सबसे प्राचीन प्रमुख व सबसे बड़ा वेद है यह है 10 मंडलों में विभाजित है इसमें 1028 सुक्त है तथा 10580 मंत्र है। वर्तमान समय में ऋग्वेद हमारी सनातन धर्म की प्रारंभिक जानकारी का स्रोत है यह हमारे धर्म व स्रोत ज्ञान की प्राप्ति हमको करवाता है। ऋग्वेद में गुरु की उपादेयता को स्पष्ट दर्शित किया गया है। इसमें बताया गया है गुरु की उपादेयता और महत्व क्या है? ऋग्वेद की रचना मंडल व अष्टक क्रम के अनुसार की गई है जो वर्तमान समय में व्यवस्थित जीवन कर्म का संदेश प्रदान करता है। ऋग्वेद में बहुत ही महत्वपूर्ण संवाद सूक्त है। जैसे विश्वामित्र नदी संवाद है। वर्तमान समय में नदियों तथा मनुष्यों के बीच एक अनोखी

संदेश से भावना स्थापित करने का भाव प्रकट करता है। वर्तमान में हमें प्रकृति स्रोतों के साथ नीति भाव रखने की अभिव्यक्ति प्रकट करता है। तथा सरमा-पाणी संवाद वर्तमान समय में भौतिक शक्तियों का व्यवस्थित ढंग से प्रयोग करना इसको स्पष्ट करता है। ऋग्वेद का यम-यमी संवाद वर्तमान समय में रिशतों की संयमिता तथा विवेक ज्ञान का संचार प्रदान करता है। ऋग्वेद वर्तमान में जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, मानस चिकित्सा के क्षेत्र में नये-नये नवाचारों का एक आधार प्रदान करता है। वर्तमान समय में ज्यादातर मनुष्य अवसाद-विषाद से ग्रसित दिखाई देते हैं इच्छाओं के अपूर्ण होने से कुंठित हो जाते हैं, उनका साहस कमजोर होने लगता है। ऐसे समय में ऋग्वेद वर्तमान समय में ऐसे मनुष्य को ज्ञान साहस और आध्यात्मिकता की एकाग्रता के माध्यम से उनका जीवन निराशा और समापन की ओर जा रहा है, उसने नूतन प्राण प्रतिष्ठा का कार्य करता है। ऋग्वेद उनको नए सत मार्ग पर चलने का एक पाठ प्रदान करता है। ऋग्वेद हमको वर्तमान समय में समय की मेहता बदलते हुए समय को शुरू परिवार बदलते हैं समय का प्रबंधन और अनुरूपता जीवन को नये आयाम ले सकती है। ऋग्वेद समय की उचित समरूपता प्रदान कर वर्तमान को एक नवीन संकल्पना प्रदान कर सकता है। यह सभी अवसर उचित कार्य जो किए जाते हैं। ऋग्वेद वर्तमान को सर्वश्रेष्ठ बनाने का अवसर प्रदान करता है। समय जो पूर्व वर्तमान भविष्य सभी कालों में होगा उसका एक अच्छा महत्व दृष्टिगोचर करता है। ऋग्वेद का एक प्रसंग है जिसमें सोम रसपान, विश्व अमृत पान की चर्चा की गई है। यह सभी विषयों के माध्यम हमको वर्तमान समय में उचित मार्गदर्शन का कार्य करते हैं तथा हम वर्तमान समय में ऋग्वेद में के माध्यम से यह बतलाता है कि हमको शुद्ध और नैतिक आचरण वन बनाकर जीवन की नवीन किरण को प्राप्त करता है तो। ऐसी महत्ती उपयोगिता इंगित करता है। ऋग्वेद में सूक्त वर्तमान में स्पष्ट रूप से महत्व और उपादेयता को बतलाते हैं। ऋग्वेद की ऋचा और मंत्र वर्तमान समय में भी प्राचीन समय की भांति एक गठित आध्यात्मिक और सदाचार भाव युक्त सम्मान के परिपोषक के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

ऋग्वेद का वर्तमान समय में महत्व

ऋग्वेद अपने प्रथम मंडल से दशम मंडल तक वर्तमान समय में एक अनोखी स्पष्ट छाप रखता है। ऋग्वेद के वंश परंपरा मंडल हमारे सनातन धर्म और ऋषि परंपरा के साथ ही हमको ऋषि सनातन धर्म व गुरुओं तथा पूर्वजों के सम्मान का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऋग्वेद में सनातन धर्म की देवी देवताओं संदर्भ प्राप्त होता है जो वर्तमान में युवा समाज को आध्यात्मिक की ओर प्रेरित करने का कार्य कर रहा है। ऋग्वेद नैतिकता और अच्छे सांप्रदायिक व्यवहार को वर्तमान में उपलब्ध कराने का कार्य करता है यह सुशासन के सही उपायों व सही क्रियान्वयनों से युक्त है जो वर्तमान समय में मौजूद मुद्दों को हल करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। ऋग्वेद कई मंडलों के साथ एकत्र होकर भी संघर्ष भाव की ऊर्जा प्रदान करता है यह हमें वर्तमान में भौगोलिक भव्यता की महत्वपूर्ण शैली प्रदान करता है। ऋग्वेद का दार्शनिक महत्व सभी से अधिक है इसमें आत्मा व पूर्व जन्म आदि, संबंधित

विषयों पर विचार मिलते हैं जो वर्तमान में शोध करने के लिए जिज्ञासु विद्वानों के लिए एक नये अनुसंधान का विषय है। ऋग्वेद का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विशेष महत्व है। ऋग्वेद के समय में स्त्रियों का समाज में पर्याप्त सम्मान था पृथ्वी, उषा, सरस्वती और वाक् व पूषा आदि का निरूपण मिलता है। जो वर्तमान में नारियों के प्रति सद्भाव व सम विचार का भाव प्रकट करते हैं। ऋग्वेद का राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में भी विशेष महत्व है। इसमें आर्यों के प्रमुख लोगों का उल्लेख मिलता है इसमें सभा राज्य समिति राजव्यवस्था युद्ध प्रशासन की पर्याप्त सामग्री की जानकारी मिलती है जो वर्तमान में हमारी राजनीतिक व्यवस्था में जनों के प्रति देश के हित में राज्य की व्यवस्था का सुनियोजन तथा युद्ध तथा अस्त्रों शास्त्रों की जानकारी से नवीन नवाचार किया जा सकते हैं। जो हमारे सनातन देश को सुदृढ़ बनाने में अकल्पनीय है। ऋग्वेद में आर्थिक महत्व को स्पष्ट दर्शाया गया है –

"शुनं नः फाला विकृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः"

ऋग्वेद के अभिव्यंजक मंत्रों के द्वारा पशुपालन उद्योग खनिज व्यापार और कृषि की विभिन्न पांडुलिपियों को बताया गया। जिन से वर्तमान समय में प्राचीन ग्रंथों को जानकर नवीन तकनीकी के नवाचार किया जा सकते हैं। भूगोल विज्ञान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बताया गया है- "चतुः समुद्रं धरुणं रयीणाम्।" चारों समुद्रों का वर्णन मिलता है। इसका ज्ञान हमको ऋग्वेद में बताया गया है - चतुर्भुज समुद्रम धर्म रतन अर्थात् चारों समुद्री का वर्णन मिलता है तथा सात नदियों का वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में इसके स्रोत के माध्यम से भौगोलिक क्षेत्र में नवीन ज्ञान को संग्रहित कर सकते हैं। ऋग्वेद ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद में पांच ऋतुओं का वर्णन मिलता है। पृथ्वी की सूर्य के प्रति आकर्षण शक्ति पृथ्वी की गतिशीलता का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त आविष्कार इसके महत्व को दर्शाते हैं। ऋग्वेद में विमान का सर्वप्रथम प्रमाण मिलता है। वर्तमान समय में इन सभी स्रोतों और जानकारी का अध्याय और अध्ययन करके शोध और वैज्ञानिकता के क्षेत्र में नये-नये आयाम स्थापित किया जा सकते हैं इसलिए ऋग्वेद में कहा गया है- "वेद ही धर्म के मूल है।"

उपसंहार

ऋग्वेद की प्रत्येक ऋचा वेद रूपी अमृत है वर्तमान युग में इसके उपादेयता व महत्व उतना ही है, जितना वैदिक समय में था। इसके सुंदर जीवन दर्शन द्वारा संपूर्ण मानव जगत का कल्याण करना है मनुष्य से ईश्वर तक पहुंचाने की सरलतम भीम का ज्ञान इसमें प्राप्त होता है इसमें मनुष्य को ईश्वर के अंगों उत्पन्न संतति कहा है-

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।"

विराट भगवान के मुख से ब्राह्मण भुजा से क्षत्रिय, जांघ से वैश्य तथा शूद्र वर्ण की पैरों से उत्पत्ति बताई गई है जिसके माध्यम से बताया गया है कि संपूर्ण मानव जाति में ईश्वर के अंगों से है।

वर्तमान में मनुष्यता के भेद को मिलाकर एक तत्व का संदेश प्रदान करता है ऋग्वेद में कहा गया है।
ऋग्वेद वर्तमान में नवीन दृष्टिकोण के साथ-साथ आध्यात्मिकता, वैज्ञानिकता शोध विषय के स्वरूप में महत्व प्रदान करता है।

संदर्भ सूचि

1. डॉ. उमाशंकर ऋषि- संस्कृत साहित्य का इतिहास, पेज - 45
2. डॉ. बलदेव शास्त्री - संस्कृत साहित्य इतिहास, पेज – 61
3. ऋग्वेद -3/33
4. ऋग्वेद -10/10
5. ऋग्वेद -10/108
6. ऋग्वेद -10/179
7. ऋग्वेद -10/90
8. ऋग्वेद -10/85
9. ऋग्वेद -10/163
10. ऋग्वेद-10/90